International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.84-90

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की समाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

अवनीश कुमार सिंह*
डॉ. निर्मला राठौर**

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के विकास एवं ज्ञानार्जन का आधर मानी जाती है। जन्म के समय मानव शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। जन्म के बाद पूर्ण रूप से वह माता पर निर्भर होता है, और फिर परिवार पर। शिक्षा के बिना बालक न तो सामाजिक बनता है और न व्यवहारिक ही। जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे–वैसे वह अपने वातावरण से अनुकूलन करना सीखता है। जीवन के कार्यो को करने में शिक्षा उसे विशेष योगदान देती है। शिक्षा न केवल व्यक्ति को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता देती है वरन् उसके व्यवहार में ऐसे वांछनीय परिवर्तन भी करती है कि वह अपना और अपने समाज का कल्याण करने में सफल होता है। शिक्षा के सम्बन्ध में डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है कि ''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए इस कार्य को किए बिना शिक्षा अनुर्वर और अपूर्ण है।''[1] शिक्षा एक शक्तिशाली हथियार है जिसका प्रयोग व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक और मानसिक निर्धनता को समाप्त कर उन्हें समृद्ध बनाने के लिए होता हैं। शिक्षा का एक उद्देश्य व्यक्ति को समाज की परिवर्तित आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित करना है। मानव एक सामाजिक प्राणी है तथा व्यक्ति का प्रथम समाज उसका अपना घर ही होता है जहाँ व्यवहार करना सीखता है।

सभी देशों में शिक्षा नीति का उद्देश्य बालकों को उन विधियों से अवगत कराना है, जिस के द्वारा उन्हें आगे की शिक्षा प्राप्त करने में सुगमता हो तथा अपने वातावरण के उत्तरदायित्वों को समझने तथा जीवन निर्वहन करने के योग्य बनाना है। इसके उपरान्त माध्यमिक शिक्षा पूर्ण रूप से विशिष्ट होती है। इसके विशिष्ट होने के दो प्रधान कारण हैं– पहला यह है कि माध्यमिक शिक्षा छात्रों को मध्यम् स्तर के व्यवसायों के योग्य बनाती है और दूसरे यह है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र उन विधियों, प्रविधियों तथा उपकरणों को समझ जाता है जिनका उपयोग वह उच्च शिक्षा के लिए करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य शिक्षा समाजोन्मुखी होती है और व्यवसायिक शिक्षा व्यवसायोन्मुखी किन्तु हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा न तो छात्रों को व्यवसायिक जीवन के लिए तैयार करती है और न उन्हें उच्च शिक्षा के लिए ही सक्षम बनाती है। यह एक अजीब घाल–मेल की स्थित में पड़ी हुई है। अतएव स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक शिक्षा का सामंजस्य उच्च तथा व्यवसायिक शिक्षा से तब तक सम्भव नहीं हो सकता है, जब तक की इसे स्वतंत्र इकाई के रूप में स्वीकार करते हुए इसकी प्रकृति को मनोवैज्ञानिक नियमों सिद्वान्तों के अनुरूप ढाला नहीं जायेगा।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों से शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के इस योगदान के कारण ही समाज में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। समाज के बदलते स्वरूप के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ और समस्याएँ जन्म ले रही हैं। इन संभावनाओं और समस्याओं की खोज तथा समाधान शैक्षिक अनुसंधानों द्वारा ही संभव है। शैक्षिक अनुसंधान शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में उठने वाले प्रश्नों में निहित क्यों और कैसे को खोजने, कार्यकारण संबंधों की व्याख्या करने को प्रेरित करते हैं। अनुसंधान के द्वारा ही नए सिद्धांतों की खोज तथा पुराने सिद्धांतों की समीक्षा भी संभव है।

* शोधार्थी लॉर्डस विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** प्रोफेसर, लॉर्डस विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

पुनरावलोकन साहित्य से अभिप्राय समस्या से सम्बन्धित अनुसंधान के लिये उपयोग में प्रयुक्त की जाने वाली समस्त पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, पूर्व के शोध–प्रबन्ध, ज्ञानकोश एवं प्राप्त अभिलेखों के अध्ययन से है। पुनरावलोकन से शोधकर्ता अपने कार्य यथा – समस्या का चयन करना, परिकल्पनाओं का निर्माण एवं उसके अध्ययन को सही दिशा प्रदान करने में उपयोग करता है। पुनरावलोकन एवं सर्वेक्षण से प्रयोग किये जाने वाले उचित उपकरण तथा आंकड़ों को सही प्रकार से प्रयुक्त करने की विधि से परिचय करवाता है। चयनित समस्या को परिभाशित करने, अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु पुनरावलोकन आवश्यक है। सीमांकन एवं परिकल्पनाओं का निर्माण कर शोधकर्ता को परिणाम की स्थिति तक पहुंचाने हेतु इसका अध्ययन महत्वपूर्ण है।

शोधकर्ता को अनुसंधान संबंधी गहन जानकारी और सर्वेक्षण की कार्ययोजना का निर्माण सम्बन्धित साहित्य से ही सम्भव है। पूर्व के शोधकताओं द्वारा समस्या का चयन, परिकल्पना का निर्माण, न्यादर्श का चयन, दत्त संकलन हेतु वांछित सामग्री निर्माण एवं उपयोग किस प्रकार किया गया है कि गहन जानकारी पुनरावलोकन साहित्य से ही प्राप्त होती है। सर्वेक्षण के समय उभर कर आने वाले नये तथ्य जो समस्या बिन्दु को स्पष्ट करने का विवेक प्रदान करते हैं, सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन से ही सम्भव है।

पण्डित, आई. (1985) – ने ''किशोरों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, आत्म–सम्प्रत्यय और उनके समायोजन पर सहनशीलता के प्रभावों का अध्ययन'' शीर्षक पर पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य सम्पन्न कर पाया कि गृह और स्वास्थ्य समायोजन के अलावा किशोरों का सामाजिक, संवेगात्मक और विद्यालयी क्षेत्र में समायोजन सार्थक रूप से भिन्न होता है। किशोर छात्रों में स्वास्थ्य, गृह, सांवेगिक और सामाजिक समायोजन की अपेक्षा विद्यालयी समायोजन ज्यादा संतोषजनक पाया गया। किशोर लड़कियों की अपेक्षा लड़कों में सामाजिक और संवेगात्मक समायोजन का स्तर संतोषजनक था।

माथुर आभा (1986) – ने अपने शोध ''विकलांग बालक एवं सामान्य बालकों के मध्य शैक्षिक उपलब्धियों एवं सम्मान का तुलनात्मक अध्ययन'' मे विकलांग बालको एवं सामान्य बालको के सम्मान मे सार्थक अन्तर पाया लेकिन इन विकलांग छात्रों में एवं सामान्य छात्रो के मध्य शैक्षिक उपलब्धियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया/ इनके द्वारा विकलांग छात्रों के में शिक्षा अर्जन की पूर्ण क्षमता को विकसित किये जाने एवं उन्हें सही मार्गदर्शन द्वारा समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जा सकता है।

शोध समस्या का औचित्य

संबंधित साहित्य के अवलोकन के आधार पर संबंधित क्षेत्र में कई शोध कार्य हुए है। किन्तु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में क्या भिन्नता होती है? विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि से सह सम्बन्ध हैया नहीं? क्या विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता उनके समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है ? आदि अनेक प्रश्न है जिनके समाधान ढूढने के लिए अनुसंधानकर्ता को इस विषय की आवश्यकता पड़ी और उसने अपने शोध के लिये इसे चुना।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में अनुसंधान के मार्ग निश्चितीकरण हेतु 1985 से 2018 तक के अपने चरो यथा – सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का विशद् पुनरावलोकन किया जिससे ज्ञात हुआ कि सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को एक साथ लेकर कोई भी अध्ययन कार्य अभी तक नहीं हुआ है। इसलिये शोधकर्ता द्वारा ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन'' नामक शीर्षक को अपने शोधकार्य हेतु चयनित किया गया।

अध्ययन के चर

- स्वतंत्र चर
  (क) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी।
- आश्रित चर
  (क) सामाजिक परिपक्वता
  (ख) समायोजन
  (ग) शैक्षिक उपलब्धि

समस्या कथन

''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का समायोजन स्तर व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

परिकल्पना अनुसंधान कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है, इसको अनुसंधान की नींव कहा जाता है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है–पूर्व चिन्तन। यदि परिकल्पना अवैधानिक एवं अनुपयुक्त होती है तो शोधकर्त्ता का सारा प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है। परिकल्पना निर्माण के पश्चात् उसके परिक्षण के बीच की प्रक्रिया अनुसंधान कार्य है। अनुसंधान में किसी नवीन तथ्य का वैज्ञानिक विधि से विश्लेषण करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि सबसे पहले अपने ज्ञान, सूचना तथा अनुभव के आधार पर एक संभावित कार्यकरण स्थिर कर लिया जाये तथा विषय से सम्बन्धित सामग्री एकत्र करके उसकी परीक्षा की जाये। परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। जब अनुसंधान कर्त्ता किसी समस्या के समाधान के लिए निर्देशित व्याख्या बनाता है तो उसे परिकल्पना कहा जाता है।

जॉन डब्लू बेस्ट के अनुसार– ''परिकल्पना एक विचार युक्त कथन जिसका प्रतिपादन किया जाता है और अस्थायी रूप से सही मान लिया जाता है और निरीक्षण प्रदत्तों के आधार पर तथ्यों पर तथा परिस्थियों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोध कार्यों को निर्देशन देता है।''

शोध की परिकल्पना

- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- शहरी क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व समायोजन स्तर में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।

शोध विधि

भूमिका – शोध की प्रकृति के आधार पर शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। सर्वेक्षण विधि को स्पष्ट करते हुए करलिंगर महोदय ने लिखा है कि ''सर्वेक्षण विधि सामाजिक, वैज्ञानिक, अन्वेषण की वह शाखा है जिसमें कम आकार वाली जनसंख्या अथवा समष्टि का अध्ययन उसमें से चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है कि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों, विवरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया जायेगा। सर्वेक्षण विधि का प्रयोग ऐसी परिस्थितियों में किया जाता है जिसमें समस्या समाधान प्राप्त करना मुख्य ध्येय होता है।

शोध अध्ययन में अनुसंधान विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिलक्षित करने को ढ़ग हैं जो समस्या की प्रकृति के द्वारा निर्धारित होती हैं। अनुसंधान में कई विधियाँ काम में ली जाती हैं। प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोध की प्रकृति सर्वेक्षण की मौलिकता व उपयोगिता के आधार पर सर्वेक्षणविधि का प्रयोग किया जाना हैं।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में, सामाजिक परिपक्वता, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण लिये है। इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया गया है –

- विद्यार्थियों के गतवर्ष के परीक्षा प्राप्तांकों के आधार पर "उपलब्धि परीक्षण।"
- विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता मापन हेतु डॉ. आर. पी. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत सामाजिक परिपक्वता मापनी ैवबपंस डंजनतपजल ैबंसम ;डैद्धए परीक्षण लिया जायेगा।
- समायोजन परीक्षण करने के लिये डॉ. ए.के.पी. सिन्हा व डॉ. आर.पी. सिंह का 'समायोजन मापनी' परीक्षण लिया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में प्राकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रतिधियों का प्रयोग किया जायेगा।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- सी.आर.–परीक्षण
- सहसम्बन्ध

शोध न्यादर्श

जब कभी किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट ज्ञान कराने के लिए उसकी कुछ एक इकाईयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की प्रक्रिया की न्यादर्श कहते है तथा चुनी हुई इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते है।

न्यादर्श समष्टि से चुनी गई कुछ ऐसी इकाईयों का समूह है जो इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है। प्रतिदर्श का चयन निष्पक्ष तथा यादृच्छिक रूप से किया जाना चाहिए।

डब्लू. जी. कोकरन– ''प्रत्येक विज्ञान की शाखा मे ं हमारे साधन सीमित है। इसलिए सम्पूर्ण तथ्य के एक अंश सें अधिक का अध्ययन नहीं कर पाते तथा उसके बारे में ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है''

इस परिभाषा में अंश को न्यादर्श माना गया है। संपूर्ण तथ्य को जनसंख्या की संज्ञा दी गई है। एक अंश के आधार पर संपूर्ण तथ्य के बारे में ज्ञान दिया जाता है जिसे न्यादर्श प्रक्रिया कहते हैं।

पी.वी. यंग – "एक सांख्यिकीय न्यादर्श उस पूरे समूह अथवा योग का एक बहुत छोटा चित्र है जिसमें से न्यादर्शन लिया गया है।"

गुड व स्केट्स – "एक न्यादर्श जैसा कि शब्द से स्पष्ट है, किसी विशाल समष्टि का छोटा प्रतिनिधि है।"

डॉ. ढौंढियाल एवं फाटक ने न्यादर्श के निम्न लाभ बताए हैं:–

- समय, शक्ति तथा धन की बचत।
- अधिक गहन अध्ययन की संभावना।
- आँकड़ों के संकलन में विश्वसनीयता एवं परिशुद्धता।

गुड एवं हैट (1952) के अनुसार, उक्त लाभों के अतिरिक्त न्यादर्श का एक लाभ यह भी है कि इसमें प्रत्येक घटक का हर दृष्टि से विश्लेषण करने एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं की गहराई तक पहुंचने की सुविधा रहती है। अतः न्यादर्श या प्रतिदर्श प्रारूप से अभिप्रायः चुनना एवं अनुमान दो शामिल प्रक्रियाओं से है। न्यादर्श या प्रतिदर्श ऐसा होना चाहिए जिससे जनसंख्या के विषय में अनुमानों से कम से कम गलती हो।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु झुन्झुनू, अलवर एवं जयपुर जिले से यादृच्छिक न्यादर्श विधि से न्यादर्श का चयन किया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में सम्भाव्य न्यादर्श के आधार पर अलवर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

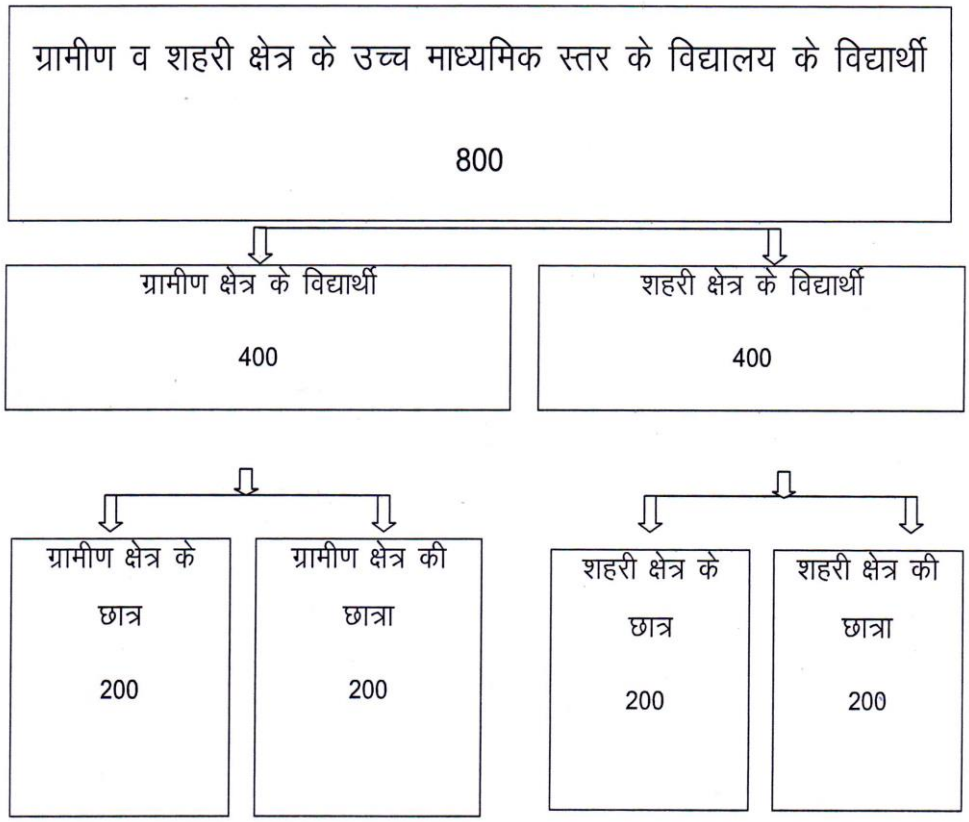

न्यादर्श के रूप में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का चयन किया गया। जिसमें अलवर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र/छात्राओं का डाटा संगृहण के लिए चयन किया गया है।

अध्ययन परिसीमन

- प्रस्तुत अनुसंधान राजस्थान प्रदेश के अलवर जिले तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अनुसंधान में अलवर जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राआ ं को सम्मिलित किया जायेगा।
- प्रस्तुत अनुसधान में केवल कक्षा 12 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।
- प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत केवल 800 विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का अध्यायवार विवरण (Tentgative Chapterwise details of Proposed Research)

- **प्रथम अध्याय–परिचयः**

इस अध्याय में प्रस्तावना, समस्या कथन, समस्या का औचित्य, शोध कार्य के उद्देश्य, शोधकार्य में प्रयुक्त विशिष्ठ शब्दों की व्याख्या, परिकल्पना, न्यादर्श, परिसीमन, विधि, प्रविधि एवं उपकरण इत्यादि के विवरण का संक्षिप्त में उल्लेख किया जाएगा।

- **द्वितीय अध्याय–सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**

इस अध्याय में संबंधित साहित्य के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष स्त्रोतों, विदेश एवं भारत में किये गये शोधकार्यों का पुनरावलोकन, सारांश एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ आदि की चर्चा विस्तृत रूप से की जायेगी।

- **तृतीय अध्याय–अनुसंधान विधि, प्रविधि,एवं उपकरण**

इस अध्याय में विधि, प्रविधि एवं उपकरणों के परिचय का उल्लेख किया जायेगा। आधारभूत सामग्री संकलन के स्रोत एवं आधारभूत सामग्री का संकलन। उपकरणों के स्वरूप का उल्लेख किया जायेगा।

- **चतुर्थ् अध्याय–प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण**

इस अध्याय में संबंधित प्राप्त तथ्यों का आलोचनात्मक मुल्यांकन एवं विश्लेषण किया जायेगा ।

- **पंचम् अध्याय–शोध, सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव**

इस अध्याय में शोध के निष्कर्ष, वर्तमान शिक्षा हेतु सुझाव, भावी शोध हेतु सुझाव एवं शोध सारांश का उल्लेख किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध हेतु उपयोगी पुस्तकों, शब्दकोषों, प्रतिवेदनों, अनुसंधानों, पत्र–पत्रिकाओं, इंटरनेट स्रोतों की सूची इत्यादि को विधिवत प्रस्तुत किया जायेगा।

- **परिशिष्ट**

शोध में प्रयुक्त उपकरणों एवं आवश्यक सूचियों को इसमें सम्मिलित किया जायेगा।

Bibliography

पुस्तकें **(Books)**

1. अदावल, एस.बी., : (1968) "एज्यूकेशनल रिसर्च", नेशनल काउसिंल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, नई दिल्ली।
2. त्रिपाठी, आर.एन. व शुक्ला, डी.पी. :रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।

3. ढौड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

4. भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,: (1977) "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।

5. भटनागर, आर. पी. तथा मीनाक्षी,: (2007) 'शिक्षा अनुसंधान' लायल बुक डिपो, मेरठ।

6. भटनागर, सुरेश : (2005) कोठारी कमीशन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

7. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

8. पाठक, पी. डी. (1994) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

9. पाण्डेय, आर.एस., : (2007) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

10. पाण्डेय, के.पी.: (2006) "शैक्षिक अनुसंधान", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

(शोध पत्रिकाएँ)

11. नई दिशा :(जुलाई, 2008.) "राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका", नई दिल्ली।

12. नई शिक्षा नीति, (2018): अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

13. नागलक्ष्मी, आर.एस., (मार्च, 1998): "इण्डियन एज्यूकेशन एब्सट्रेक्ट्स", एन.सी.ई.आर.टी., न्यू दिल्ली।

14. भारतीय आधुनिक शिक्षा (2016): एन.सी.ई.आर.टी., न्यू दिल्ली।

15. लघु शोध सारांश संकलन (2009–10) क्रियात्मक अनसंधान, शोध, एवं नवाचार प्रभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर, छत्तीसगढ़।

(एनसाइक्लोपिडिया)

16. बुच, एम.बी., : (1983–88) "फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 1, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली,

17. बुच, एम.बी., : (1988–92) "फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 2, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली।

18. बुच, एम.बी., : (1988–92..) "सिक्स सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 1, एनसी. ई.आर.टी. नई दिल्ली।

19. राजपूत, जे.एस.,: (2005.) "एनसाइक्लोपिडिया ऑफ मॉडर्न टेक्नीक्स ऑफ एज्यूकेशनल", वोल्यूम–1, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

20. स्मिथ, डी., :(1999) "एनसाइक्लोपिडिया ऑफ मेजरमेंट एण्ड इवेल्यूएशल", वोल्यूम–4,कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, न्यू देहली।

(शब्द कोष)

21. आबिद रिजवी, : मेगा हिन्दी शब्द कोश, मारूति प्रकाशन, 33 हरि नगर, मेरठ।

22. फादर कामिल बुल्के, (1987) तृतीय संस्करण, अंग्रेजी–हिन्दी कोश, एस.चन्द एण्ड कम्पनी(प्रा.लि.) राम नगर, नई दिल्ली।

Website

23. www.shodhganga.com

24. www.google.com

❖◆❖